रात्रि क्लास 16/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

बेहद का बाप आते ही हैं बच्चों को खुश करने। कल्प-कल्प सभी का दुख दूर करने आते हैं। समझा देते हैं मेरे को याद करने से दुख सभी दूर हो जावेंगे। बाकी रहा पद। वह फिर पढ़ाई पर है। सो भी जास्ती नहीं है। सिर्फ चक्र को जानना है। स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। स्व को ज्ञान हुआ चक्र का। समझना है और समझाना है। चक्र में रोला है। हम कहते हैं 5000 वर्ष का चक्र, वह कहते हैं लाखों वर्ष का चक्र है। इसमें ही मनुष्य मुँझते हैं। बाप कहते हैं इस यज्ञ में विघ्न पड़ते हैं; क्योंकि लड़ाई है। रावण-राज्य में विघ्न ज़रूर पड़ते हैं। नई दुनिया में कोई झगड़ा आदि नहीं है। बाप आकर सभी झगड़ा मिटा देते हैं। बच्चे जानते हैं बाप को याद करना है, तो सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान में झगड़ा होता ही नहीं। उन्हों के गुण गाते हैं। अपनी अवगुण वर्णन करते हैं और देवताओं के गुण गाते हैं। इससे ही सिद्ध होता है। अभी तुम बच्चे वह बन रहे हो तो ऐसा महिमा लायक बनना है। माया की लड़ाई भी बड़ी कड़ी है। हार-जीत का खेल है। यह है रूहानी बच्चों को हार-जीत का खेल। बच्चे माना आत्माएँ। आत्मा हार खाती है और जीत पाती है। बाप कहते हैं मैं जीत पहनाता हूँ। माया हार खिलाती है। कोई ऊँच पद, कोई कम पद पा लेते। देवता ज़रूर बनते हैं। जैसे बैरिस्टर ज़रूर बनते हैं फिर कोई ऊँच, कोई कम। पुरुषार्थ सभी करते रहते हैं। हिम्मत, महावीरपना दिखाते हैं। बाप सुनकर खुश होते हैं। फिर भी शुभ बोलते हैं। हार्टफेल नहीं होते हैं। फट कहते हैं हम तो नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अच्छा शुभ बोलते हो। तेरी जय हो। सुखधाम तो जाते हो, बाकी जो कहते हैं हम नारायण बनेंगे, वह तो बच्चे भी समझ सकते हैं, बापदादा भी समझ सकते हैं। सभी तो एकरस बन न सके। कुछ न कुछ भूल-चूक अन्त तक होती रहेगी जब तक कर्मातीत अवस्था हो। है तो पढ़ाई। जबकि देवता बनना है तो दैवीगुण भी ज़रूर चाहिए। नम्बरवार बनते हैं। कोशिश कर जितना हो सके उतना बच्चों को समझाना चाहिए। यह तो समझते हैं कल्प-कल्प जो पुरुषार्थ किया है वही करेंगे। सभी तो एक जैसे कर (न) सके। बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है तीनों को शिक्षा देनी पड़ती है। वण्डर यह है। यह एक ही है तो सहज है याद करना। बाबा हमारा बाबा भी है, गुरु भी है। यह आत्मा मनुष्य की, वह दूसरी आत्मा जो बैठी है वह है ईश्वर। इनकी आत्मा को घड़ी-2 शरीर मिलता है। वह जन्म नहीं, आधार लेते हैं। कहते हैं मेरा जन्म अलौकिक, दिव्य है। और कोई का नहीं होता। इनका जन्म भी न्यारा, कर्म भी न्यारा है। कोई लेप-छेप नहीं लगता है। माया की लड़ाई तुम्हारी है, मेरी नहीं। मैं तुमको युक्ति बताता हूँ, ऐसे-2 करो। बच्चे जानते हैं ड्रामा अनुसार हमारी विश्व पर जीत है। हम बाप का बनते हैं, बनने से ही हम विश्व का मालिक बन जाते हैं। पढ़ाई से पद मिलता है। यह भी वण्डर है कितनी हेवज(हेवी) ड्रामा बन जाती है। हिस्ट्री तो हूबहू रिपीट होगी। सिर्फ टाइम का फर्क है। उन्होंने लाखों वर्ष आयु बताकर अंधियारे में डाल दिया है। गीताएँ बहुत बनाई हैं; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। यह कोई परम्परा से चलता नहीं है। दुनिया ही बदली हो जाती है। तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर पढ़ते हो नई दुनिया के लिए। यह है कल्याणकारी युग। तुमको पता है कुछ न कुछ कला कम होती है। फिर सभी खत्म हो जाती है। बच्चों को नॉलेज तो बड़ी अच्छी मिलती है। गुणवान भी बनना है। पुरुषार्थ बन्द नहीं हो सकता। लॉ नहीं कहता। असम्भव है। ड्रामा में सभी का पार्ट मिला हुआ है पुरुषार्थ का। पुरुषार्थ करते ही रहते हैं। पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध? तो कहेंगे पुरुषार्थ बड़ा। हर बात में पुरुषार्थ करना होता है। बाप श्रीमत देते हैं तो पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ चलना चाहिए। मुख्य है काम विकार, जिसके लिए ही बाप कहते हैं यह महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से ही तुम जगत जीत बनेंगे। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। बच्चों को खुशी होती है हम सुखधाम जावेंगे। बाप भी दिलासा दिलाते हैं। बाकी थोड़ा टाइम है। तुम इस समय बहुत ही भाग्यशाली हो। ईश्वर पढ़ाते हैं। वहाँ तो देवता पढ़ाते हैं। पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है। बाप पढ़ाते भी हैं ज़रूर। स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। फिर पद कम-जास्ती, पढ़ाई पर होती है। बाप कहते हैं फॉलो मी। फॉलो फादर एण्ड मदर। भूलें तो होती रहती हैं। दैवीगुण धारण करने भी पुरुषार्थ करते रहते हैं।

तो माया उसमें विघ्न डालती है। सावधान किया जाता है इस चलन से तुम ऊँच पद पा न सकेंगे। किसको नहीं मानते हैं तो फिर उनके बड़ों को कहना पड़ता है। ऐसी भूलें होती हैं। फिर समझाना पड़ता है। कई ऐसे होते हैं जो अपनी भूल समझते ही नहीं। फिर समझाना पड़ता है। बाप कहते हैं काम चिक्षा पर बैठ कितने बेसमझ बन गए हो। श्याम-सुन्दर की कहानी कैसी अच्छी है। कब और कोई बता न सके। इसलिए ही कहा जाता है श्री श्री श्री श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। श्री श्री सो हुआ बाप। फिर हमको श्री बनाते हैं फिर श्रेष्ठ बनते हैं। भ्रष्ट में भी नम्बर है; परन्तु उनकी माला नहीं गाई जाती है। सतयुग में भी श्रेष्ठ हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर यहाँ है भ्रष्ट। उनमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप को पुकारते भी हैं आओ आकर हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाओ। बाप कहते हैं मैं आऊँ कहाँ। तमोप्रधान मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। तो बेल रख दिया है। शिव नाम-रूप वाला रखा है। शंकर भी नाम-रूप वाला। वह निराकार, वह साकार। दोनों को इकट्ठा कर दिया है। अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। बाप समझाते हैं मैं तो निराकार हूँ। शंकर तो सूक्ष्मवतन का हो गया। बाप ने समझाया है शंकर कोई है नहीं। ऐसे-2 चित्र चार भुजा आदि वाला कोई है नहीं। वैष्णव अर्थात् विष्णु के कुल वाले। प्रजापिता ब्रह्मा के कुल से फिर विष्णु के कुल का बनते हैं। विष्णु को चतुर्भुज दिखाया है। बाप ने तो सूक्ष्मवतन को भी उड़ा दिया है। यह सभी साक्षात्कार है। ब्रह्मा सो विष्णु। विष्णु सो ब्रह्मा। सो तो यहाँ ही बनते हैं। बच्चों को बहुत समझाते रहते हैं, साथ में यह भी समझाते हैं याद करो, तो सतोप्रधान बन जावेंगे। अनेक बार तुम बच्चों ने मिलकर पहाड़ को उठाया है। पत्थर के पहाड़ से सोने का पहाड़ हो जावेगा; क्योंकि वहाँ अथाह सोना होता है। बाकी पहाड़ कोई बदल थोड़े ही जावेगा। मनुष्य की बुद्धि सोने, पत्थर बन जाती है। कोई भी बात में मुँझना न है। बाप ने कहा है मुझे याद करो। और कोई बात में सवाल करने की दरकार नहीं। टाइम वेस्ट होता है। बाप ने कहा है स्वीटहोम स्वर्ग में जाने चाहते हो ना। बाकी फालतू प्रश्न आदि क्यों पूछते हो? बाप कहते हैं मुझे याद करो, तो सतोप्रधान बनो। सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। ज्ञान है बहुत सीधा। जो हमारे धर्म का न होगा वह समझेंगे फिर कैसे।

यहाँ बैठे अभ्यास करने से यही याद आवेगा। रचयिता और रचना का चक्र ही याद रहना चाहिए। बाप और वर्सा स्वर्ग का। बाप स्वर्ग रचते हैं। बाप को याद करना है। माया भुलाती है। भूल–भुलैया का खेल है। धंधा आदि करना है; परन्तु समझना है समय बाकी कितना है। शरीर निर्वाह चलता रहे, इतना ही रखना है। ब्याज आदि की भी लालच नहीं। हिसाब ऐसा रखना चाहिए जो पैसा है उनसे रोटी-टुकड़ा। बस। या तो हम शिवबाबा के खज़ाने में दे देते हैं। फिर हम उनसे खाते रहेंगे। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर। काल कंटक सभी दूर। सन्यासियों को रोटी मिलती ही है। यहाँ भी शिवबाबा के भण्डारे से रोटी मिलनी ही है। तुम सभी सांवरे हो। तुमको गोरा बनाने हुण्डी भराता हूँ। इसमें ही बच्चों को निश्चय बुद्धि चाहिए। स्प्रीचुअल फादर स्प्रीचुअल बच्चों को ही नॉलेज देते हैं। इसलिए बोला है लिखो इनकॉरपोरीयल गॉड फादर ही स्प्रीचुअल नॉलेज दे सकते हैं। मनुष्य तो क्या, देवता भी नहीं दे सकते हैं। देते फिर भी हैं ब्राह्मणों को। ब्राह्मण(ीं) का है कुल। बाप भी यहाँ है। समझते तो सभी कुछ हैं और समझाते भी रहते हो। बाप ने कितना समझाया है; परन्तु तमोप्रधान बुद्धि होने कारण बैठता ही नहीं है। तुम जीते जी बाप को याद करते हो। सतोप्रधान बनते हो ऊँच पद पाने। सबसे डिफीकल्ट है याद की यात्रा। और सभी से बुद्धियोग तोड़ एक से लगाते हो। विनाश का समय होगा तो तुम्हारी याद की यात्रा पूरी होगी। सारा मदार इस पर है; क्योंकि याद की यात्रा अभी बच्चों को बहुत कम है। अखबार में था यह दो हैं अमेरिका और रशिया। दोनों चाहे तो विनाश करें या शांत करें; परन्तु शांति तो होनी नहीं है। वह लड़ेंगे, मक्खन तुमको मिल जावेगा। यह बेहद का ड्रामा बड़ा ही मज़े का है। अच्छा, गुडनाइट।